" हमारी सम्पूर्ण व्यवस्था का केन्द्र 'मानव' होना चाहिये। जो 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' के न्याय के अनुसार समष्टि का जीवन्तमान प्रतिनिधि एवं उसका उपकरण है। भौतिक उपकरण मानव के साधन हैं, साध्य नहीं। जिस व्यवस्था में शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा युक्त ऐषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थ चतुष्टयशील पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का ही विचार किया जाये, वह अधूरी व्यवस्था है। हमारा आधार एकात्म मानव है जो एकात्मक समष्टियों का एक साथ प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखता है। 'एकात्म मानव दर्शन' के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा।"

दीनदयाल उपाध्याय

दीनदयाल शोध केन्द्र

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

मो. : 9415135164, 9336669300

E-mail: [redacted]

ddsk.csjmv@gmail.com

दीनदयाल शोध केन्द्र

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

कानपुर।

विश्व में उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक कलहपूर्ण विचार धाराओं ने जन्म लिया। इस शताब्दी में संघर्ष की अवधारणायें प्रस्तुत की गयीं। इसके परिणाम स्वरुप वंशवाद, मजहबवाद, जातिवाद, भाषावाद एवं क्षेत्रवाद जैसे विवाद प्रारम्भ हुये। संघर्ष का घिनौना रुप आज भी थमा नही है। अब यक्ष प्रश्न यह है कि क्या मानव सभ्यता इन संघर्षपूर्ण सैद्धान्तिक थपेड़ों के साथ पतित होने के लिये नियति द्वारा अभिशप्त है? यद्यपि आज के विद्वान चिन्तक व अर्थशास्त्री संघर्ष की बातों को नकारने लगे हैं। ऐसे सुधी चिन्तकों का मत है ''वैश्वीकरण के इस युग में ऐसे विचारों का कोई स्थान नहीं। चूंकि विभिन्न कारणों से सभ्यताओं के संघर्ष की दलील सही नहीं प्रतीत होती है इसलिये इसे ''सभ्य बनाम असभ्य'' संघर्ष का नाम देना चाहिये। संघर्ष उन लोगों के मध्य है जो सभ्य हैं और जो सभ्य नहीं हैं। सभ्य समाज लोकाचार और नियम-कानून के आधार पर चलता है। प्रत्येक संस्कृति के उदार और सुसंस्कृत लोग नैतिकता, स्वतंत्रता और पारस्परिक सम्मान की रक्षा के लिये एक-दूसरे को जोड़ते हैं। आज के दौर में जब असभ्यता का उल्लेख होता है तो इसका अर्थ तकनीकी और आर्थिक मानकों पर कमजोर वर्ग से नहीं, अपितु यह विचारधारा आधारित असभ्यता है। वैचारिक असभ्यता आधुनिक जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है।''

श्रद्धेय दीनदयाल जी ने सर्वप्रथम इसका समाधान खोजा था। उन्होनें विश्व को ''सभ्यताओं के संघर्ष'' से निकाल कर ''विश्व सभ्यताओं का एक कुटुम्ब है'' के रुप में प्रतिस्थापित किया, जो ''वसुधैवकुटुम्बकम्'' की भारतीय अवधारणा की पुष्टि करता है। इसके लिये उन्होनें ''भू-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'' की अवधारणा प्रस्तुत की।

सत्संकल्प लेकर विश्वविद्यालय की कार्य परिषद ने 'दीनदयाल शोध केन्द्र' प्रारम्भ करने का निर्णय लिया है। उल्लेखनीय है कि दीनदयाल जी के सामाजिक जीवन का प्रारम्भ कानपुर से ही हुआ था।

दीनदयाल शोध केन्द्र - कार्य प्रकल्प

'' दीनदयाल शोध केन्द्र '' श्रद्धेय दीनदयाल उपाध्याय की स्मृति में एक पीठ के रुप में कार्य करेगा। दीनदयाल जी का सरल, सादा एवं मर्यादित व्यक्तित्व अनुकरणीय है। वह एक युग ऋषि थे। मध्यम श्रेणी परिवार में जन्में तथा बाल्यकाल में ही माता-पिता की स्नेह छाया से वंचित दीनदयाल जी ने अविवाहित रहकर एक सन्यासी की भांति आजीवन भारतीय संस्कृति, राष्ट्र तथा समाज की सतत् सेवा की। उन्होंने तनावों से मुक्ति दिलाने वाला तथा वास्तविक सुख , शान्ति एवं समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने वाला सिद्धान्त प्रतिपादित किया। वह व्यक्ति, समाज, सृष्टि तथा परमेष्टि में एकात्मता स्थापित करने वाला परम वैभव-सम्पन्न, गौरवशाली समाज का निर्माण एकात्मिक जीवनशैली की आधार शिला पर करना चाहते थे किन्तु किसी विदेशी विचार को न तो सम्पूर्णता में हेय मानते थे और न ही प्रत्येक स्वदेशी वस्तु श्रेष्ठ। शोध केन्द्र विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य करेगा।

हमारी गतिविधियाँ

1. निम्न विषयों पर शोध कार्य :
   i. महापुरुषों का व्यक्तित्व, उनके विचार एवं कृतित्व
   ii. सामाजिक जीवन
   iii. ज्वलन्त मुद्दे
2. साहित्य का प्रकाशन
3. 'एकात्म मानव दर्शन' व्याख्यान माला।
4. ज्वलन्त विषयों पर मत सर्वेक्षण तथा प्राप्त निष्कर्षों से शासन को अवगत कराना
5. विभिन्न प्रकल्पों पर कार्य:
   i. 'एकात्म मानव दर्शन' तथा अन्य दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन
   ii. प्रतिभाओं की खोज तथा कार्यशालायें आयोजित करना
   iii. शोध-पत्रों पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन
   iv. पुस्तकालय तथा वाचनालय विकसित करना
   v. शोधार्थियो को छात्रवृत्ति तथा दीनदयाल जी के विचारों पर कार्य करने वाले सेवा निवृत शिक्षकों को आर्थिक सहायता।

डा. श्याम बाबू गुप्त
M.Com., Ph.D., D.Litt.
(निदेशक)